समकालीन हिन्दी कहानी का सक्षिप्त परिचय

डॉ कामना कौशिक

विभागाध्यक्ष (हिन्दी) सी एम के नेशनल पी जी गर्ल्स कॉलेज सिरसा (हरियाणा)

Email - kamnacmk78@gmail.com

प्रस्तावनाः कहानी विद्या का जन्म होने के बाद यह निरन्तर गतिशील है। विभिन्न पड़ावों को पार करते हुए यह समकालीन हिन्दी के रूप में साहित्य में अपनी पहचान बना पाई। इस लेख में हम उसी का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कर रहे हैं।

कहानी उतनी ही पुरानी है जितनी मनुष्य की भाषा यह एक ऐसी विद्या है जो कि मानव जीवन के अनुभवों को यथार्थ व संवेदना के धरातल पर अभिव्यक्ति प्रदान करती हैं। जीवन की विविध परिस्थियों और परिवर्तन को यह सरलता व सहजता से अभिव्यक्ति करने में जितनी सक्षम है, उतनी अन्य विद्या नहीं। जीवन में परिवर्तन के अनुसार कहानी के नामक रूपों में भी परिवर्तन आता गया। इन्हीं परिवर्तनो में सन् 1965 में कहानी के रूप में जो परिवर्तन परिलक्षित हुआ उसे हम समकालीन कहानी के नाम से जानते है। 'नई धारा' का समकालीन कहानी विशेषांक फरवरी–मार्च 1966 मे प्रकाशित हुआ था, जो इस आन्दोलन के मुददो को लेकर विचार करता है। समकालीन कहानी को जानने पूर्व हमें समकालीन शब्द कर अर्थ स्पष्ट होना चाहिए। समकालीन का अर्थ एन साईक्लोपीडिया अनुसार इसी काल खण्ड में होने वाली घटना या प्रवृति या एक ही कालखण्ड में जी रहे व्यक्ति। समकालीन को हम समसामयिक के रूप भी में भी जान सकते है ।

डॉ0 चन्द्र भूषण तिवारी के अनुसार ''तात्कालिकता अक्सर सूचनाओं की प्रक्रिया होती है, खुद से अलग होकर,अक्सर बाहरी सूचनाओं की प्रतिक्रिया ओर प्रायः एक आस्थाहीन मानस में घर कर लेती है। समकालीन इससे भिन्न किसी ऐतिहासिक प्रक्रिया का अंग होती है। किसी समाज का व्यापक जन–मानस उसी में विम्बित होता है। तात्कालिकता एक प्रकार का पलायन होती है। इतिहास की उस मुख्य धारा बातों से नजर बचा लेने की कोशिश, जो किसी काल से गुजरती है, उससे विषयांतर।'' (1)

हिन्दी कहानी 1950 तक मुख्यतः वैचारिक प्रतिबद्धताओं से जुड़ी रही। 1956 में 'नयी कहानी' पत्रिका का विशेषांक श्री भैरव प्रसाद गुप्त के सम्पादन में प्रकाशित हुआ। इसी विशेषांक के आधार पर आगे वाले कहानीकारो को नयी कहानी के नाम से संज्ञापित करते हुए परम्परागत कहानी की अन्तर्वस्तु और शिल्प को नकार दिया गया। नयी कहानी भोगे हुए यथार्थ को स्वीकारती है अतः अनूभूति की प्रमाणिकता नयी कहानी की आधार भूत घोषणा थी। इसी प्रकार नयी कहानी हिन्दी कहानी की विकास धारा को एक नीवन आवास प्रदान करती है। लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय ने ही कहानी को 'स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कहानी' कहना अधिक उचित' सार्थकव महत्वपूर्ण समझा है।

कुछ विद्वानो ने इस नामकरण पर आपत्ति भी प्रकट की। छठे–सातवें दशक में नयी कहानी की प्रतिक्रिया में ' अकहानी आन्दोलन' का जन्म हुआ। गंगा प्रसाद विमल इस नामकरण से सहमत है। सन् 1965–1970 के मध्य से अब तक की कहानी को समकालीन कहानी की संज्ञा दी जाती है। 'समकालीन कहानी' के अन्तर्गत विभिन्न कहानी आन्दोलनों को जन्म हुआ। जिनका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार से हैः–

सहज कहानी के बारें में अमृतराय जी कहते है ' मोटे रूप में इतना ही कह सकते है कि सहज वह है जिसमें कोई आडम्बर नहीं, बनावट नही, ओढ़ा हुआ मैनरिज्म या मुद्रादोष नही है, आइने के सामने खड़े होकर आत्मरति के भाव से अपने ही अंग–प्रत्यग को अलग–अलग कोणों से निहारते रहने का प्रबल मोह नही है, किसी का अन्धा अनुकरण नही है।'' (2)

सहज कहानी कल्पित अनुभूतियो, नारों और वैचारिक प्रतिबद्धता का विरोध करती है।

सन् 1972 में 'समान्तर कहानी' आन्दोलन का उदय हुआ। कमलेश्वर इस आन्दोलन के सूत्रधार थे। इस कहानी में सामाजिक सरोकरों को जोड़ते हुए आम आदमी की प्रतिष्ठा का स्तर मुखरित हुआ। सन् 1974 में डॉ0 महीप सिंह के नेतृत्व में 'सचेतन कहानी' ने जन्म लिया। इसका मूल स्वर यहीं था कि जीवन स्वयप् भी जीयो ओर दूसरों को भी जीने दो। यह नये परिप्रेक्ष्य तथा नये अन्वेषण की गत्यात्मक कहानी है। इस कहानी ने जीवन और साहित्य के बीच फिर से सम्बन्ध स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास किया। सन् 1978 'सक्रिय कहानी' आन्दोलन का सूत्रपात हुआ। यह कहानी मनुष्य को अपने अन्दर की कमजोरियों से लड़ने के लिए प्रेरित करती है। राकेश वत्स सक्रिय कहानी को प्रस्तावित किया था। उनका कहना हैः–''सक्रिय कहानी का सीधा और स्पष्ट मतलब है–आदमी की चेतनात्मक उर्जा जीतन्तता की

कहानी। उस समझ, अहसास और बोध की कहानी जो आदमी को बेबसी,वैचारिक निहत्थेपन और नपुंसकता से निजात दिलाकर पहले स्वयं अपने अन्दर की कमजोरियो के खिलाफ खडा होने के लिए तैयार करने की जिम्मेदारी अपने सिर पर लेती है।'(3)

जनवादी आन्दोलन को 'समान्तर' और 'सक्रिय' कहानी का जनवादी संस्करण माना जाए तो गलत न होगा। इसमें आम आदमी के संघषों को केन्द्र मे रखा गया। यह आन्दोलन 'समकालीन कहानी' आन्दोलन का महत्वपूर्ण और बड़ा भाग है। 'समकालीन कहानी' का मुख्य पात्र निम्न–मध्यमवर्गीय मनुष्य ही है जो अपने परिवेश से सम्पृक्त और सामाजिक जड़ो द्वारा अस्त्वि की खुराक पा रहा है। समकालीन कहानी में मध्यमवर्गीय ससंकट मनुष्य को सांवदेनिक प्रामाणिकता के साथ चित्रित करने पर बल देती है अस्मिता संकट के प्रश्न से यह सम्बधों की भी पुनर्व्याख्या करती है। इसमें मानव मूल्यों में परिवर्तन और अस्तित्व संकट की गुंज स्पष्टतय दृष्टिगोचर होती है। यह सामन्त वादी मूल्यों का विद्रोह करती हुई नवीन चेतना का विकास करती है। स्त्री को अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए तो मूल्य चुकाना पड़ता है उसकी उस छटपटाहट तक पहुचनें की कोशिश भी समकालीन हिन्दी कहानी ने की है। समकालीन हिन्दी कहानी का विकास उस समय हुआ है। जब हमारी आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यिक क्षेत्र को बुनियादी रूप से नये प्रकार के साम्राज्यवाद ने प्रभावित किया हुआ है। संक्रमण काल की इस स्थिति में जहॉ नारी देह सौन्दर्य प्रतियोगिताओं की तरफ आकर्षित है, समाज के पिछडे व दलित वर्ग शोषण की चक्की में पीस रहे है। समकालीन हिन्दी कहानी ने मानव को आस्था विश्वास का स्वर देने की कोशिश की। समकालीन हिन्दी कहानी अस्तित्व एवं अनुभूति के इस दोहरे संकट से गुजरती हुई कहानी है। यथार्थ की प्रमाणिकता का तथ्य समकालीन हिन्दी कहानी में नये स्वर के साथ उभरा। इसमें यथार्थ की स्थितियों के उन कारणों की तह में जाने का आंकलन है, जिनसे स्थितियॉ उत्पन्न हुई।

उपसंहार

'समकालीन कहानी' 'नई कहानी' के विकास का अगला चरण है। इस मध्य के सभी आन्दोलनों मे अनुभूति की प्रमाणिकता, विश्वसनीयता ओर अनुभूति सत्य को संतुलित शिल्प में व्यक्त किए जाने पर जोर देते है । समकालीन कहानी में अस्तित्व व अनूभति दोनों का ही संकट परिलक्षित हुआ है। सामाजिक जीवन में विशेष रूपसे सम्बधों की त्रासदी और मानवीय जीवन की विडम्बनाओं पर समकालीन कहानी अपना ध्यान केन्द्रित करती है यह सम्बन्धों को उनके परम्परागत रूप से भिन्न बदलते हुए सामाजिक–धार्मिक परिवेश में परिभाषित करती है,यह यौन सम्बन्धो की नैतिकता की पुनर्व्याधता करती है। इसमें यथार्थ के उस पक्ष को उभारा गया है जो सामाजिक और मानवीय स्थिति और नियति के भयावह संदर्भो और अस्तित्व की बुनियादी समस्याओं से जुड़ा हुआ है, यह दलित चेतना से जुड़े अन्त विरोधी को ठोस रूप से अभिव्यक्ति देती है, नारी अस्मिता से जुड़े विभिन्न आयामो को इसने स्वर दिया, यह सम्बन्धो के धरातल पर भी यथार्थ का बोध जगाने का प्रयत्न करती है, परम्परा और आधुनिकता का दृढ़ इसमें महत्वपूर्ण रूप से उभरा हैं। इस प्रकार इन विभिन्न प्रवृतियो से सम्पन्न समकालीन हिन्दी कहानी की विकास यात्रा निरन्तर जारी है।

सन्दर्भ सूची

(1) हिन्दी कहानीः पहचान और परख, सपा0 इन्द्रनाथ मदान पृ0 170
(2) राकेश वत्स ' सक्रिय कहानी' (हिन्दी कहानी विविध आन्दोलनः एक विश्लेषण पृ 64
(3) अमृतराय, सहकहानी पृ0 63 (समकालीन हिन्दी कहानी सपा0 डॉ रामजी तिवारी)